International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 350-351

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 350-351
www.allresearchjournal.com
Received: 15-11-2018
Accepted: 17-12-2018

माला कुमारी
शोध प्रज्ञा, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

Correspondence
माला कुमारी
शोध प्रज्ञा, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

असगर वजाहत रचित 'डेमोक्रेसिया' की समीक्षा

माला कुमारी

सारांश
बहुमुखी प्रतिभा के धनी असगर वजाहत की पहचान का मुख्य आधार है– उनकी कहानियाँ। उनकी अनेक कहानियाँ अबतक प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी सारी कहानियाँ अपने समय से बात करती नजर आती है। इस दृष्टि से असगरजी की सबसे प्रसिद्ध संग्रह है– 'डेमोक्रेसिया'। इस संग्रह में संकलित सभी कहानियाँ महत्त्वपूर्ण हैं, जिसका मूल कारण है– अपने समय से संवाद, सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों की बेबाक प्रस्तुति, कथ्य का वैविध्य तथा भाषा और शिल्प में अभिनवता। असगर वजाहत ने अत्यंत रोचक भाषा, सहज शिल्प और स्पष्ट कथ्य का प्रयोग करते हुए डेमोक्रेसिया के माध्यम से तद्युगीन राजनीति पर व्यंग्य किया है। डेमोक्रेसिया असगर साहब की प्रसिद्धि में चार चाँद लगाता है।

मूल शब्दः डेमोक्रेसिया, असगर वजाहत, संवाद, सामाजिक, राजनीतिक

प्रस्तावना
असगर वजाहत हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मुख्यतः साठोत्तरी पीढ़ी के बाद के महत्त्वपूर्ण कहानीकार एवं सिद्धहस्त नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने कहानी, नाटक, उपन्यास, यात्रा–वृत्तांत, फिल्म एवं चित्रकला आदि विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण रचनात्मक योगदान दिया है। ये दिल्ली स्थित जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हिन्दी–विभागाध्यक्ष रह चुके हैं।
असगर वजाहत मूलतः और प्रथमतः कहानीकार हैं। कहानी के बाद उन्होंने गद्य–साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया और अपने लिए हमेशा नए प्रतिमान बनाए। अपने लिए जिस भी विधा को उन्होंने चुना, वहाँ हमेशा पहले दर्जे की रचना संभव हुई। असगर वजाहत के लेखन में अनेक कहानी–संग्रह, पाँच उपन्यास, आठ नाटक समेत कई अन्य रचनाएँ शामिल हैं। इनकी पहली कहानी 1964ई० के आसपास छपी थी तथा पहला कहानी–संग्रह– 'अंधेरे से' 1976ई० में आपातकाल के दौरान पंकज बिष्ट के साथ (संयुक्त रूप से) छपा था। इनकी कहानियों के अनुवाद अंग्रेजी, इतालवी, रूसी, फ्रेंच, ईरानी, हंगेरियन, पोलिश आदि भाषाओं में हो चुके हैं।
असगर वजाहत उन विरले कहानीकारों में गिने जाते हैं, जिन्होंने पूरी तरह अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखते हुए भाषा और शिल्प के सार्थक प्रयोग किए हैं। उनकी कहानियाँ एक ओर आश्वस्त करती हैं कि कहानी की प्रेरणा और आधारशिला सामाजिकता ही हो सकती है तो दूसरी ओर यह स्थापित करती हैं कि प्रतिबद्धता के साथ नवीनता, प्रयोगधर्मिता का मेल असंगत नहीं है। 'मास मीडिया' से आक्रांत इस युग में असगर वजाहत की कहानियाँ बड़ी जिम्मेदारी से नई 'स्पेश' तलाश कर लेती हैं। राजनीति और मनोरंजन द्वारा मीडिया पर एकाधिकार स्थापित कर लेने वाले समय में असगर की कहानियाँ अपनी विशेष भाषा और शिल्प के कारण अधिक महत्त्वपूर्ण हो गयी हैं।[1]
'डेमोक्रेसिया' को प्रतिष्ठित कथाकार असगर वजाहत की विशिष्ट कहानियों का संग्रह माना जाता है, इस संकलन की रचनाएँ विशिष्ट जरूर हैं, पर उन्हें कहानियाँ मानने में आपत्ति हो सकती है। निःसंदेह असगर वजाहत ख्यातिलब्ध कहानीकार हैं, उनके बहुचर्चित कहानी–संग्रह सर्वविदित हैं। यथा– 'अंधेरे से' (1976), 'दिल्ली पहुँचना है', 'स्वीमिंग पूल', 'सब कहाँ कुछ', 'मैं हिन्दू हूँ', 'मुश्किल काम'। असगर जी के अनुसार उनकी पहली कहानी 'वह बिक गई' 1964 के आसपास छपी थी।[2] निःसंदेह उनकी कहानियाँ स्तरीय हैं। वह गंभीर विमर्श की अपेक्षा रखता है।
'डेमोक्रेसिया' की भूमिका में असगर वजाहत साहब ने रोचक बात दर्ज की है– ''बहुत साल पहले भैरव प्रसाद गुप्त ने मुझे कहा था कि मेरी कहानियों की सबसे बड़ी कमी यह है कि वे रोचक होती हैं।''[3] इस मंतव्य पर असगर साहब की टिप्पणी भी द्रष्टव्य है। वे कहते हैं– ''मेरे हिसाब से तो हर अभिव्यक्ति को रोचक होना चाहिए। .....मैं कोई उबाऊ कृति चाहे वह महान् कृति क्यों न हो, नहीं पढ़ सकता तो दूसरा मेरे उबाऊ रचना क्यों पढ़ेगा।''[4] उनका यह कथन स्वीकार्य है कि रोचकता सोद्देश्य होनी चाहिए। उनके अनुसार रचना में मूल्यों, विचारों, प्रतिक्रियाओं और अस्वीकृतियों का

स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। इसमें दो मत नहीं, जहाँ नहीं।[5] असगरजी का चिंतन समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण और विषमता के विरूद्ध है। उनके चिंतन के निष्कर्ष से किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। उनका कथन है– ''समाज को अधिक मानवीय समाज बनाना कलाओं का काम है।''[6] रचना और विचारधारा के संबंध एवं अनुपात पर भी असगर वजाहत साहब का निष्कर्ष अर्थवान है। प्रस्तुत कृति की भूमिका में जो विशिष्ट तथ्य द्रष्टव्य हैं, वे हैं– (1) रचनाकार अद्‌भुत की तलाश करता है। (2) अमूर्तन के माध्यम से यथार्थ के जितने स्तर बनते हैं, वह अन्यथा मुश्किल है।[7] उपर्युक्त तथ्य 'डेमोक्रेसिया' की रचनाओं में मुखर हुए हैं। 'अद्‌भुत की तलाश' के फलस्वरूप 'डेमोक्रेसिया' की रचनाओं में कथा–तत्त्व का लोप हो गया है। रचनाओं की रोचकता भी प्रभावित हुई है। वर्तमान सामाजिक जीवन की भयावहता से रचनाकार इतना अधिक आक्रांत है कि वह तथाकथित संगत बोल भी नहीं पाता। सटीक अभिव्यक्ति के लिए एवसिर्डिटी का सहारा लेता है। चमत्कारिक घटनाओं को जिस ढंग से पेश किया गया है, वह लगता है, उससे बेहतर ढंग शायद और नहीं हो सकता। अद्‌भुत चमत्कारपूर्ण जादुई, ऊल–जलूल, असंगत कथनों–कार्यों की शृंखला 'डेमोक्रेसिया' की प्रत्येक रचना के केन्द्र में उपलब्ध है। इन अंशों को पढ़कर, प्रबुद्ध–बौद्धिक पाठक ही नहीं, आम आदमी भी इनके मंतव्यों को सहज ही आत्मसात करता चलता है। हर अभिव्यक्ति का औचित्य, उसकी सार्थकता और गूढ़ अर्थगर्भिता जाहिर होती चलती है। क्रोध और भावावेश का अतिरेक इससे अधिक और प्रभावी ढंग से शायद आकार नहीं ले सकता। भले ही, इससे रचनाओं के कहानीपन लुप्त हो गया हो। रचनाकार का उद्देश्य कोई रोचक कहानी कहना नहीं है, बल्कि अमूर्तन के माध्यम से अपने समय की विसंगतियों, मूल्यहीनताओं और अप–संस्कृति को निरावरण करना है।

'डेमोक्रेसिया' की सात रचनाओं का शिल्प लघु–विसतारी खंडों। अनुच्छेदों द्वारा निर्मित है। ये पाँच से दस तक हैं। इन खंडों में कोई संगति नहीं है। तारतम्य है तो मात्र इस दृष्टि से कि इनकी अंतर्वस्तु वर्ण्य–विषय से संबद्ध है। रचना के शीर्षक से ही सरोकार रखती है। वस्तुतः ऐसा लगता है, मानो लेखक कोई स्वप्न देख रहा है और उसका वर्णन कर रहा है। क्रमशः स्वप्न जैसे अटपटे व अद्‌भुत दृश्य उभरते हैं। इससे कथन न तो सार्थक बन पाते हैं, न सशक्त। इस भंगिमा के उपयोग की आवश्यकता लेखक ने क्यों महसूस की, इसका समाधान तो असगर साहब ही कर सकते हैं।

'खेल का बूढ़ा मैदान गुस्से में हैं' में नौ खंड हैं। इसका संबंध स्टेडियम, क्रिकेट मैच, एम्पायर आदि से है, पता चलता है– ''मैदान तो पत्थर का हो गया है। विकेट लगाना संभव न हो सका..... संसार में पहली बार बिना विकेट लगाए क्रिकेट खेला जा रहा है..... बूढ़ा खेल का मैदान पीच पर आकर खड़ा हो जाता है। ....दो लाख देने पर भी नहीं हटता।'' [8] क्रिकेट मैंचों में जो धांधली चलती है, पैसों का जो लेन–देन होता है, संभवतः लेखक का इशारा उस ओर है।

'दो पहियों वाले रिक्शे' दस खंडों में है। सड़कों पर तीन पहियों वाले रिक्शे चलते हैं। 'मैं दिन–भर रिक्शे पर चढ़ा इधर–उधर आता जाता रहता हूँ, लेकिन रात में रिक्शेवाला मेरे ऊपर चढ़ जाता है और उसे उठाए–उठाए मैं संसद, सर्वोच्च न्यायालय, प्रधानमंत्री सचिवालय का चक्कर लगाता हूँ।' रात में ही क्यों? और 'रिक्शा एक तरल पदार्थो की तरह पूरे कमरे में फैल गया।' सर्वत्र सांसद, विधायक, लोकतंत्र, सरकार, सत्ता, विपक्ष, आंदोलन, आरक्षण, राजनीतिक दल, दलित आत्मदाह, मीडिया। 'आज प्रधानमंत्री शैचालय में 20 सैकेण्ड अधिक बैठे। और यहाँ भी 'पीच' और 'बचे हुए ओवर' आदि शब्दावली से इस रचना ने आकर लिया है।

तक साहित्य और साहित्य–लेखन का संबंध है। असगर जी की दृष्टि साफ है। उनके कथन तर्क–संगत हैं। सबकुछ विवाद का विषय बनता भी

'आत्मघाती कहानियाँ', जहाँ हर आदमी के हाथ में एक–एक चाकू है जो एक–दूसरे के पेट में घोंप रहे हैं। 'बम, विस्फोटकों की आवाजें', 'खून की नदियाँ', 'लाशें हाहाकार', 'आतंक', 'आत्मघाती आतंकवादी' आदि से निर्मित है। 'आत्मघाती कहानियाँ' रचना।

'मुख्यमंत्री और डेमोक्रेसिया' और 'सूफी का जूता' दस–दस खंडों में समाहित हैं। अक्सर राजनीतिक नेता और मंत्री अपना मसखरापन जाहिर करते हुए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं– डेमोक्रेसिया, ब्रेकफस्टवा, डिनरवा, हेलीकॉप्टरवा। डेमोक्रेसिया है, अतः नेताओं, मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों को डरने की जरूरत नहीं। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दौरा करते हुए मुख्यमंत्री अचानक हेलीकॉप्टरवा का दरवाजा खोल नीचे कूद पड़ते हैं। कोसी की मुख्यधारा में गिरे और नीचे चले गये। मीडिया ने रहस्योद्‌घाटन किया– हमने सुना है, आप केवल अपने वोटरों की लाशे पहचान–पहचान कर ला सकते हैं। क्योंकि देश में डेमोक्रेसिया है। आपदा–प्रबंधन की जिम्मेदारी सरकार नहीं निभाती। मुख्यमंत्री महीने में एक उद्‌घाटन करते नहीं कि तबियत खराब होने लगती है। डेमोक्रेसिया का सही अर्थ तो राजनीतिज्ञ ही समझते हैं।

'सूफी का जूता' में फैशन की दुनिया का मजाक है। इसी प्रकार संकलन की अन्य रचनाएँ भी अनोखापन लिए हुए हैं। जहाँ तक इन रचनाओं की अर्थ संगति का प्रश्न है, आलोचक बहुत कुछ वह भी खोज ला सकते हैं जो स्वयं लेखक ने सोचा तक न हो इन जटिल रचनाओं का खींचतान करके भाष्य प्रस्तुत करना, दूर की कौड़ी लाना है। व्यंजना–प्रधान रचनाएँ भी प्रांजल होती हैं। इन रचनाओं का उलटबासियों जैसा रूप है। लेखक ने अपने समय का सच उद्‌घाटित किया है।

निष्कर्ष

साठोत्तरी कथाकारों में असगर वजाहत की विशिष्ट पहचान का आधार है– उनका वैविध्यमय कथ्य और प्रयोगात्मक शिल्प। वैसे तो उनका संपूर्ण साहित्य इन विशिष्टताओं से युक्त है, पर कहानियों में यह प्रयोग अपने चरम पर दिखता है। उनकी कहानियाँ नवीन शिल्पों में निर्मित होकर भी अपनी रोकचता नहीं खोती है। उनकी कहानियों के कई संकलन प्रकाशित हैं, पर 'डेमोक्रेसिया' की अपनी अलग पहचान है। इसमें संगृहीत सभी कहानियाँ अपने समय की सामाजिक–राजनीतिक वृत्तांत को यथार्थ रूप में उद्‌घाटित करती हैं। लेखक ने बेबाक भाषा में अपने समय से संवाद किया है।

संदर्भ

1. हिन्दी गद्य–साहित्य, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण– 2018, पृ०– 378
2. वही, पृ०– 379
3. डेमोक्रेसिया, असगर वजाहत, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण– 2001, पृ०– 03
4. वही, पृ०– 42
5. वही, पृ०– 6
6. वही, पृ०– 72
7. वही, पृ०– 4 (भूमिका)
8. वही, पृ०– 112
9. वही, पृ०– 171